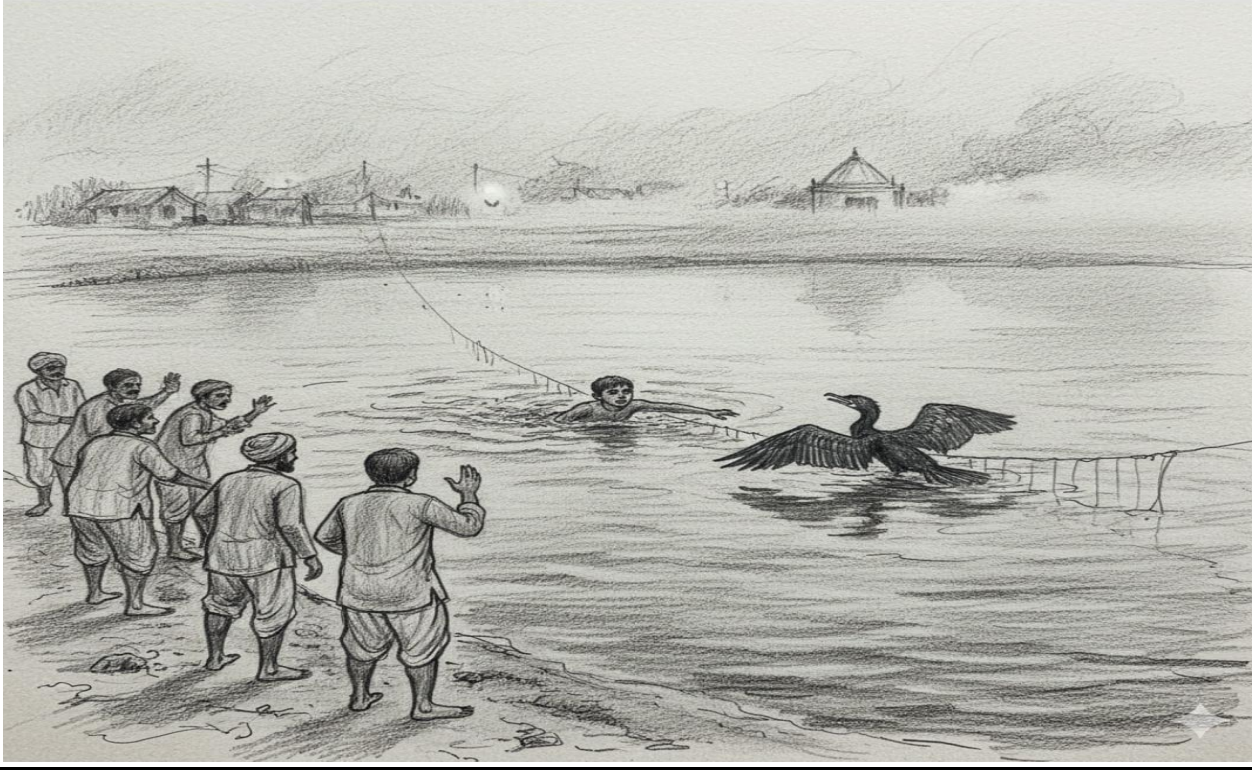


करुणा की प्रकाशा



जो वाक्या आप सबके साथ चर्चा करने वाला हूं , वह बिल्कुल सत्य घटना है। बात मेरे अपने गांव की है। लगभग 13 वर्ष पुरानी, पक्षी- प्रेम की एक कहानी। मेरे गांव में हमारे पड़ोस में एक अति सामान्य परिवार रहता है, लगभग 2004 से मैं इस परिवार के संपर्क में रहा । थोड़ा परिवार की पृष्ठभूमि पर चर्चा करूं, तो परिवार का मुखिया किसी बीमारी के कारण लगभग पागलपन की स्थिति में है। पत्नी बहुत मेहनती खुश - मिजाज किस्म की महिला थी । परिवार में बड़ी बेटी और चार बेटे थे, जो 2004 के आसपास बहुत छोटे थे, लेकिन वह महिला अपने मेहनती स्वभाव से पूरे परिवार का भरण- पोषण कर रही थी। सब कुछ सामान्य चल रहा था। इन्हीं चार लड़कों में से तीसरे स्थान वाले लड़के का नाम सफ़ी मोहम्मद था, जिसकी जिंदगी के बारे में हम चर्चा करेंगे। सफ़ी मोहम्मद बहुत ही खुश मिजाज, मतवाला और मिलनसार लड़का था। स्कूल में ज्यादा समय तक नहीं जा पाया। शारीरिक रूप से मजबूत होने के कारण जल्द ही वह परिवार के साथ छोटे-छोटे कामों में हाथ बंटाने लगा था । खेतों में काम करके मजदूरी के रूप में कुछ पैसे भी कमाने लगा था ।

आते - जाते जब भी मिलता खुश मिजाज, न जाने कौन सा खजाना उसके पास था। गांव में बाबा पीर की दरगाह है, जहां हर वीरवार को सेवा करता था। वहीं से होने वाले मासिक कच्ची जलसे से शायद उसने मधुर कच्ची गुनगुना- गाना भी सीख लिया था। पूरे गांव की खबर रखता था। पूरे गांव के लोग उसे पसंद करते थे। हमेशा दूसरों की मदद को तत्पर , लोगों की ही नहीं, पक्षियों की भी। अब मैं मुख्य घटना पर आता हूं। बात 30 दिसंबर, 2012 दिन रविवार की है। गांव में एक तालाब है। आमतौर पर पंचायत उसे मछली-पालन के लिए ठेके पर देने का एक नियम बनाती है और ठेकेदार मछलियों को जल-काग व पक्षियों से बचाने के लिए पतली तारों का एक जाल बनाकर रखते हैं। उस दिन लगभग शाम को 4:00 बजे इन तारों में एक काले रंग का जल - काग फंसा हुआ था और तड़प रहा था। संयोग की बात है, सफ़ी मोहम्मद जिसकी उम्र मात्र 18 वर्ष थी, वहां से गुजर रहा था। गांव के कुछ लोग वहां खड़े

होकर उस पक्षी को तड़पता हुआ देख रहे थे, मगर किसी के भी दिल में उसको बचाने का ख्याल नहीं आया। शायद इतनी ठंड के मौसम में कोई उस पक्षी के लिए क्यों मुसीबत मोल लेता। मगर कुछ लोग अलग ही होते हैं। सफ़ी मोहम्मद उन्हीं में से एक था। यह देख वह जिंदगी और मौत के बीच में संघर्ष कर रहे उस पक्षी को बचाने के लिए तैयार हो गया। कुछ लोगों ने उसे मना किया और कुछ लोगों ने कहा “हां सफ़ी! तुम ही से बचा सकते हो” और सफ़ी मोहम्मद उसे पक्षी को बचाने के लिए बर्फ जैसे ठंडे पानी में उतर गया और तैरता हुआ लगभग किनारे से 70- 80 फुट की दूर, 8 फीट गहरे पानी में, उस पक्षी तक पहुंचा। तारों को खोलकर उसे पक्षी को आजाद कर दिया। उसे आजाद करने के बाद उसे शायद यह महसूस हुआ होगा आज उसने बहुत बड़ा पुण्य का काम किया है और खुदा उसे कभी ना कभी इस पुण्य काम का इनाम अवश्य देगा। लेकिन शायद किसी को नहीं मालूम था कि खुदा उसे इतना प्रसन्न होगा कि उसे तुरंत इस काम के लिए इनाम देगा। लोगों ने देखा कि तैरने में निपुण वह सफ़ी मोहम्मद वापसी में कुछ दूरी पर ठहर गया। जो लोग उसकी वाह-वाह कर रहे थे, शायद उन्हें लगा के सफ़ी हंसी- मजाक में ऊपर नीचे हो रहा है। वह दो बार पानी के ऊपर की ओर आया, मगर तीसरी बार भाग्य ने उसे संभलने का मौका नहीं दिया। लोगों ने शोर मचाया, मगर किसी ने भी हिम्मत करके उसे बचाने का प्रयास नहीं किया। वह डूब गया, उस बेजुबान पक्षी के लिए जिसे फंसा देख उसकी दिल करुणा से भर गया था, मगर अपनी जान देकर करुणा की प्रकाशा का ऐसा उदाहरण बड़ा ही दुर्लभ है। पूरे गांव में सफ़ी के इस करुणा भरे कारनामे का बोलबाला था। रात हो गई प्रशासन की तरफ से उसकी छानबीन की गई, मगर सर्दी की वह बेहद घनी धुंध वाली रात। परिवार पर दुख का पहाड़ टूट गया। माँ और बहन का रो-रो कर बुरा हाल था। उसके मृत- शरीर को नहीं खोजा जा सका। परिवार के लिए वह रात, उनके दुख को बयां करने के लिए कोई शब्द नहीं। फिर अगले दिन सुबह 11-12 बजे धुंध छंटी, फिर खोज आरंभ हुई। शाम को बेहद मशक्कत के बाद उसके मृत- शरीर को ढूंढा गया। ऐसे मतवाले लोग जो अपनी जान की परवाह न करके, लाभ-हानि का विचार न करके, कूद पड़ते हैं दूसरों की मदद के लिए। सफ़ी मोहम्मद ! क्या वह मूर्ख था, क्या उसे नहीं मालूम था कि पानी बहुत ठंडा है, और उसका खून जम सकता है, और जान भी जा सकती है। शायद नहीं, दया और करुणा का भाव इन सब बातों से ज्यादा हावी हो गया था।

बेशक, सफ़ी मोहम्मद अब इस दुनिया से हमेशा के लिए जा चुका है, मगर उसकी करुणा की परकाष्ठा को सदियों तक याद रखा जाएगा।

द्वारा लिखी गई:-रघबीर सिंह, गणित अध्यापक.